छात्रों-युवाओं के लिए जनरल नालेज का आखिरी सबक

चुनाव क्या है?

जनता की गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपये खर्च करके जनता के ही साथ धोखाधड़ी!

चुनावी नेता क्या हैं?

पूँजीपतियों के कुत्ते, साम्राज्यवादियों के टट्टू!

आज चुनावी पार्टियों के सफल नेता कौन हो सकते हैं?

चोर, पॉकेटमार, ठग, बटमार, तस्कर, दंगाई, गुण्डे, वेश्यागामी, लोफर-आवारे, दलाल, ठेकेदार, सिनेमा के भांड, खूनी, माफिया-सरगना और धर्म के व्यापारी!

संसद क्या है?

सुअरबाड़ा! गुण्डों-डकैतों-वेश्यागामियों-भ्रष्टाचारियों का अड्डा। यही आज के पूँजीपतियों के राजनीतिक प्रतिनिधि हैं!

वोट कैसे पड़ते हैं?

जाति-धर्म पर जनता को बाँटकर, दंगे भड़का कर, नोटों से खरीदकर, बन्दूकों से डराकर, गरीबों को लालच देकर!

संसद-विधानसभाओं में क्या होता है?

कुछ दिखावटी बहसें, मारपीट, जूतम-पैजार, औश्र असली काम होता है जनता को लूटने-कुचलने के कानून बनाने का!

सरकार क्या करती है?

देशी-विदेशी पूँजीपतियों की सेवा, उनकी लूट को बढ़ाना और व्यवस्थित करना, जनता को कुचलना, धोखा देना।

पूँजीवादी शिक्षा क्या करती है?

नौजवानों की रीढ़ की हड्डी निकाल लेती है। दिमाग में भूसा भर देती है। धनिकों के बेटों को अफसर बनने की ट्रेनिंग देती है। गरीबों के कुछ बेटों को क्लर्क और चपरासी बनने की शिक्षा देती है और बाकी को बेरोज़गार भटकते हुए, दीन-हीन बेचारा बनकर जीने की आदत सिखाती है!

स्वास्थ्य विभाग क्या करता है?

पैसे वालों को चंगा करके उनके घर भेजता है और गरीबों को उनके सभी कष्टों से छुटकारा दिलाकर भगवान के घर।

भारतीय जनतंत्र क्या है?

पूँजीपतियों की तानाशाही!

तथाकथित जनतांत्रिक संस्थाएँ और न्यायपालिका क्या है?

पूँजीवादी शासन के दिखाने के दाँत!

और खाने के दाँत?

फौज, पुलिस, जेल, नौकरशाही!

न्यायपालिका क्या करती है?

थैलीशाहों के हित में न्याय का व्यापार! पूँजीवादी न्याय की नज़र में गरीब होना ही एक अपराध है! शोषण पूँजीपतियों का जन्मसिद्ध अधिकार है! जुल्म को चुपचाप सहना शरीफ़ नागरिक का गुण है! जुल्म का विरोध सबसे संगीन जुर्म है।

इस पूरे ढाँचे का विकल्प क्या है?

जुल्म के ख़िलाफ़ मेहनतकशों और आम लोगों की एकता! इंकलाबी संगठनों का निर्माण! मौजूदा निज़ाम के ख़िलाफ़ आम बग़ावत! पूँजीवाद का नाश! समाजवाद के उसूलों पर, न्याय और समता पर आधारित एक नये भारत का निर्माण!